B.A. Part- III

Philosophy Paper - 05

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

"The Immortality Of The Soul"

(Part - II)

वैज्ञानिक तो मात्र भौतिक पदार्थों से सम्बन्धित होते हैं वे 'आत्मा' जो आध्यात्मिक है के विषय में कुछ नहीं कहते। फिर कोई भी आत्मवादी यह स्पष्टतः सिद्ध नहीं कर सका है कि शरीर का त्याग करने के समय या उसके बाद आत्मा का स्वरूप क्या है ? गैलवे के शब्दों में ....

"among those who accept the idea (of immortality), the conviction is becoming more marked, that men can not form any clear and consistent representation of the nature of life after death." 562

इस प्रकार हम देखते हैं कि आत्मा की अमरता में विश्वास का कोई ठोस आधार खोज लेना असम्भव नहीं तो एक कठिन कार्य रहा है। फिर भी अमरत्व की भावना धर्म दर्शन में आरम्भ से ही एक प्रमुख प्रश्न के रूप में चली आ रही है।

इसमें विश्वास के आधार रूप में समर्थकों ने अपनी-अपनी युक्तियों को दिया है उनमें निम्नलिखित प्रमुख है —

(1) प्लेटो ने आत्मा को एक ऐसा सरल द्रव्य माना है जिसका विभाजन नहीं होता है। उसने अपने तार्किक आधार पर बतलाया कि किसी वस्तु के वास्तविक गुण के विनाश के लिए उसका विभाजन अनिवार्य है। यानी किसी वस्तु के जटिल होने पर ही उसका विनाश होता। अतः आत्मा सरल न होकर सावयव होती तो उसका विनाश सम्भव हो जाता। किन्तु आत्मा तो एक ऐसा सरल प्रत्यय है जिसका विभाजन असम्भव है। अतः निःसन्देह आत्मा अमर है।

(2) रेने डेकार्ट ने भी प्लेटो की तरह आत्मा को एक द्रव्य माना जिसका अनिवार्य गुण चेतना है। उसने बतलाया कि चेतना आत्मा का स्वरूप लक्षण है, जिसके बिना आत्मा की कल्पना नहीं की जा सकती। चूँकि Descartes के अनुसार द्रव्य एक अविनाशी शक्ति है यानी द्रव्य अमर है उसका नाश नहीं हो सकता और आत्मा एक द्रव्य है अतः निःसन्देह आत्मा अमर है, उसका नाश सम्भव नहीं।

(3) टायलर ने आत्मा की अमरता को सिद्ध करने के सन्दर्भ में बतलाया है कि मृत्यु एक चिरन्तन सत्य है। जिस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, उसके अस्तित्व का अनुभव नहीं कर सकने के कारण हम ऐसी गलत धारणा बना लेते हैं कि उस व्यक्ति का सम्पूर्ण

नाश हो गया। किन्तु टायलर के अनुसार ऐसा मानना वस्तुतः तर्कहीन और असिद्ध है। उनके अनुसार यदि हमारी इन्द्रियाँ आत्मा के अमर होने का अनुभव करने में असमर्थ है तो इस आधार पर कभी भी उसे नश्वर कहा जा सकता। वस्तु स्थिति यह है कि व्यक्ति के मृत्यु के बाद भी उसकी आत्मा अमर है, किन्तु इन्द्रियों की शक्ति सीमित होने के कारण उसकी अमरता का अनुभव हमें नहीं है।

(4) Kant नैतिक युक्ति के आधार पर आत्मा की अमरता को सिद्ध करते हैं। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में एक नैतिक संकल्प है। मानव का चरम लक्ष्य होता है नैतिक संकल्प को अनुकूल बनाना। अतः वह इस चरम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहता है। फिर मानव की इस छोटी वय में इस चरम लक्ष्य को प्राप्त करना असम्भव है इसके लिए मानव को अनेक बार जन्म लेना पड़ता है। मानव का यह पुनर्जन्म आत्मा की अमरता को प्रमाणित करता है क्योंकि उसका शरीर तो भौतिक है जिसका नाश सम्भव है इसीलिए पहलेवाला शरीर दूसरे जन्म में नहीं रहता। अस्तु, शरीर जब नश्वर है तो उसके आधार पर मानव के बार-बार जन्म लेने को सिद्ध नहीं किया जा सकता। इसके लिए अवश्य ही कोई अनश्वर सत्ता माननी होगी। Kant यहीं पर सिद्ध करते हैं कि मानव को जब अपने चरम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बार-बार जन्म ग्रहण करना पड़ता है, तो यह तथ्य सिद्ध करता है कि आत्मा ही वह अनश्वर सत्ता है जो बार-बार नए शरीर को धारण कर

इस संसार में आती है। यदि वह नश्वर होती तो मृत्यु के बाद शरीर की तरह ही उसका भी नाश हो जाता और पूर्नजन्म कभी सम्भव नहीं होता। किन्तु ऐसा होता नहीं है, क्योंकि आत्मा अमर है।

— To be continued —